E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

दुर्योधन का चरित्र चित्रण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन का चरित्र आंशिक रूप में भीम से मिलता जुलता है। दुर्योधन भीम के समान उग्र स्वभाव का है। दुर्योधन को अपनी सेना एवं भाइयों तथा आत्मपौरुष पर पूर्ण विश्वास है। इसीलिए वह अपनी विजय निश्चित मानता है। सम्भवतः इन्हीं कारणों से उसने सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये हुए श्रीकृष्ण का अपमान किया। दुर्योधन को यह पूर्ण विश्वास था कि पाण्डव लोग मेरा क्या कर सकते हैं। इस युद्ध में मेरी विजय निश्चित है।

जिस समय भानुमती अपने स्वप्न की कथा दासियों को सुना रही थी, उस समय दुर्योधन सुन रहा था जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती थी, वैसे-वैसे दुर्योधन की क्रोधाग्धि बढ़ती जाती थी। यहाँ तक कि दुर्योधन भानुमती को कुलटा भी कहने लगता है। भानुमती पुष्प आदि लेकर अमङ्गल की शान्ति के लिए तैयार होती है । उसी समय दुर्योधन आकर भानुमती से कहता है कि अरी देवि! तुमको यह आशंका नहीं करनी चाहिए, यदि तुम इस प्रकार दुःखी होती हो तो-'दशों दिशाओं में व्याप्त पृथ्वी को कम्पित करने वाली हमारी अक्षौहिणी सेना का क्या फल होगा? द्रोणाचार्य से क्या लाभ हुआ? अङ्गदेश के राजा कर्ण का क्या लाभ हुआ? और डरपोक तुम मेरे सो भाइयों के हाथ रूपी वृक्षों की छाया में सुख पूर्वक बैठी हो, दुर्योधन रूपी सिंहराज की पत्नी हो, तुम्हारे लिये भय का कारण क्या हो सकता है। इससे दुर्योधन का **अहंकारी स्वभाव** तथा **आत्मविश्वास** प्रकटित होता है। उसी समय तेज आंधी आ जाती है, दुर्योधन उस भयकर युद्ध के वातावरण में भानुमती के साथ उपवन में शृङ्गार की बात करता है, इससे भी दुर्योधन का अहंकार प्रकटित होता है। जिस समय दुःशाला माता रोती हुई दुर्योधन के पास जयद्रय वध करने की अर्जुन की प्रतिज्ञा की सूचना देती है तो दुर्योधन अहंकार के साथ कहता है कि- यदि अर्जुन ने सूर्यास्त से पहले जयद्रथ का वथ करने की प्रतिज्ञा की है तब तो

आपको प्रसन्नता होनी चाहिये, दुःख नहीं करना चाहिये क्योंकि अब तो भाइयों सहित युधिष्ठिर समाप्त हो गया। इसके अतिरिक्त युधिष्ठिर और जुड़वे नकुल-सहदेव का तो कहना ही नहीं, भीम और अर्जुन में से कौनसा एक ऐसा वीर है जो चमकती हुई तलवार को हाथ में लिये हुये सिन्धुराज तुम्हारे बेटे पर आक्रमण करने में समर्थ हो सकता है अर्थात नहीं, इसी भाव को कम करते हुए भट्टनारायण ने लिखा है-

धर्मात्मजं प्रति यमौ च कथैव नास्ति मध्ये वकोदर किरीटभृतोर्बलेन।
एकोऽपि विम्फुरितमण्डलचापचक्रं कः सिन्धुराजमभिषेणयितुं समर्थः।।

यद्यपि भानुमती के साथ दुर्योधन का शृङ्गारपूर्वक वार्तालाप उसके चरित्र को पतित बना देता है। भानुमती के द्वारा शङ्का करने पर फिर भानुमती को फटकारता हुआ दुर्योधन कहता है-अरी भानुमती! पाण्डवों के प्रभाव को जानती हुई भी तुम इस प्रकार आशंका कर रही हो। देखोः दुःशासन के हृदय से रक्त रूपी जल के पीने और गदा से दुर्योधन की जांघों को तोड़ने के विषय में तेजस्वी पाण्डवों की जैसी प्रतिज्ञा थी वैसी ही प्रतिज्ञा युद्ध स्थल में जयद्रथ के वध के विषय में समझनी चाहिये। उससे दुर्योधन का अत्यन्त अहंकारी स्वभाव प्रकटित होता है, इसमें किसी को कोई सन्देह नहीं रह जाता।

दुर्योधन अहंकारी होने से साथ-साथ **कोमल हृदय एवं दयालु** भी था। जिस समय दुःशासन के हृदय का रक्तपान करने में भीम सफल हो जाता है और अभिमन्यु के वध का बदला लेने के लिये अर्जुन ने वृषसेन को घेर कर मार डाला उस समय यह सुनकर दुर्योधन का हृदय कांप गया। दुर्योधन ने अपने सारथी को फटकारते हुए कहा, तुमने मुझे इस प्रकार युद्ध भूमि से हटाकर कायरता का काम किया है। इससे तो यह अच्छा होता कि मैं भी भीम के हाथों द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो जाता। सूत दुर्योधन को युद्ध में जाने से रोकता है। परन्तु दुर्योधन कहता है, मुझे मत रोक मैं युद्धभूमि में अवश्य जाऊँगा। अन्त में द्रोणाचार्य का वध हो जाने पर अश्वत्थामा क्रोध करता है, उस समय भी दुर्योधन का अहंकार शान्त नहीं होता है, दुर्योधन अपनी माँ गांधारी और पिता से कहता है कि कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर ने एक भाई के बिना भी प्राण छोड़ने की प्रतिज्ञा की है, फिर दुर्योधन सौ भाइयों के मारे जाने पर भी

जीने की इच्छा करता है। मैं दुःशासन का रक्त पीने वाले उस अपने शत्रु भीम को गदा के भागों से विदीर्ण करके दिशाओं में न फेंक दें और इस दशा में सन्धि करुँ, इससे दुर्योधन की दयालुता और अहंकारिता प्रकटित होती है।

इस नाटक में दुर्योधन का चरित्र बड़ा **स्वाभिमानी** है। वह अपने शत्रु का प्रत्यक्ष में ही अहित करना चाहता है, परोक्ष में नहीं-

प्रत्यक्षं हतबान्धवा मम परे हन्तुं न योग्या रहः।
किं वा तेन कृतेन तैरिव कृतं यन्न प्रकाश्यं रणे।।
एकोऽहं जगतीत्रय क्षयकरो मातः! कियन्तोऽरयः।
साम्यं केवलमेतु दैवमधुना निष्पाण्डवा मेदिनी।।

भीम द्वारा यह प्रस्ताव करने पर कि वह शस्त्र धारण करके किसी भी पाण्डव युद्ध कर सकता है, वह साहसप्रिय भीमसेन से ही युद्ध की माँग करता है-

कर्णदुःशासनवधात्तुल्यावेव युवां मम।
अप्रियोऽपि प्रियो योद्धुं त्वमेव प्रियसाहसः।।

उसका पक्ष बिल्कुल गिर गया और भविष्य में उसे सफलता की कोई आशा तक नहीं रह गई है तथापि वह किसी भी प्रतिबन्धक पर शत्रुओं से सन्धि स्थापित करने के लिए प्रस्तुत नहीं है-

उदात्तपुरुषव्रीडावहमसुखावसानं च कथमिव करिष्यति दुर्योधनः सह पाण्डवैः सन्धिम्।

अन्त में दुर्योधन प्राणरक्षा के लिये सरोवर में छिपकर बैठ जाता है। दुर्योधन को खोजता हुआ अर्जुन और श्रीकृष्ण के साथ भीम वहाँ पहुँचता है, भीम के द्वारा फटकारने पर जलाशय से निकल जाता है और घनघोर गदायुद्ध करता है, कभी भी दुर्योधन ने आत्मविश्वास और अहंकार का परित्याग नहीं किया।